सोने की मोहर

संतोष बजाज

बुलाने के लिए पत्र लिखा, लेकिन उन्होंने अपने जोड़ों के दर्द का बहाना बना निर्मला की मां को बुलवाने का सुझाव दिया। निर्मला की मां आई। उन्होंने तन-मन से अपनी बेटी की सेवा और देखभाल की और एक सुंदर सी नातिन की नानी बनी।

निर्मला और किशोर दोनों ही अपने बच्चे के जन्म पर खुश थे लेकिन नानी ने एक दिन कह ही दिया—"निर्मला, मैं तो सोने की मोहर लेकर आई थी कि बेटा होगा तो उसे यह दूंगी। अब मैं यह अपने ही पास रखूंगी। जब भी मेरा नाती होगा तो उसे दूंगी।" यह कह कर सचमुच ही उन्होंने सोने की मोहर बेटी-दामाद को दिखाकर बक्से में वापिस बंद कर ली। कुछ दिन बाद वह अपने घर लौट गई। निर्मला और किशोर अपनी ही खुशी में खोए पुराने ढर्रे से जीवन बिताने लगे।

धीरे-धीरे ब्याह के दस सालों में निर्मला के घर तीन बेटियों का जन्म हुआ। पहली का नाम सुमन, दूसरी का लता और तीसरी का सीमा रखा गया। हर जापे में निर्मला की ही मां आती और सोने की मोहर लाती। लेकिन न निर्मला के घर बेटा हुआ और न ही वह सोने की मोहर उसे मिली।

कुछ साल बाद निर्मला की मां का देहांत हो गया। सास-ससुर को यह गम खाए जा रहा था कि उनका वंश चलाने वाला ही कोई नहीं, लेकिन किशोर और निर्मला के आपसी प्यार में कभी कोई कमी नहीं आई।

लड़कियां बड़ी होती गई। माता-पिता ने अपनी बच्चियों को कभी लड़कों से कम नहीं माना।

खेल-कूद, पढ़ाई-लिखाई के साथ-साथ लड़कियों के सहज गुण भी उनमें आए। बड़ी लड़की सुमन जब पहली बार बारहवीं की परीक्षा में अपने स्कूल में अव्वल आई तो मां का मन गद्‌गद् हो उठा। उसने दुगुने उत्साह से तीनों बेटियों को खूब पढ़ाने का निश्चय किया।

सबसे बड़ी सुमन ने एम.ए. किया और उसके बाद कंप्यूटर की विशेष ट्रेनिंग कर हवाई जहाज की एक अंतर्राष्ट्रीय कंपनी में नौकरी कर ली।

निर्मला की दूसरी बेटी ने इंजीनियरिंग के बाद बिजनेस मैनेजमेंट पास कर एक जानी मानी कंपनी में दो साल की नौकरी की। अब वह अमेरिका की एक यूनिवर्सिटी में रिसर्च कर रही है।

तीसरी लड़की है यही सीमा। निर्मला को आज यह याद करके हंसी आ गई कि उसका नाम उसने सीमा क्यों रखा था। उसे लगा कि बेटे के लोभ में उसने जो तीसरी लड़की को जन्म दिया है तो अब उसे एक सीमा खींच देनी चाहिए। अब और संतान नहीं होगी। यही उसके परिवार की सीमा होगी। उसने अपनी इस बेटी का नाम सीमा रखा था।

यही सीमा आज भारतीय प्रशासनिक सेवा (आई.ए.एस.) कर मसूरी में प्रशिक्षण पा रही है। वहीं से उसने अपनी मां को पत्र लिखा है। पत्र ने इतना भावुक कर दिया कि निर्मला यह भूल गई कि वह पुरानी बातों को सोचते हुए न जाने कितनी बार रोई और कितनी बार अकेली बैठी मुस्कराती रही। उसे अपनी मां के मोहर लाने और निराश होकर वापिस ले जाने की बात कचोटती रही। वह जीवन भर इस अपमान को नहीं भूल पाई।

काश, आज इन लड़कियों की नानी जिंदा होती तो वह देखती कि जिस सोने के टुकड़े के योग्य उसने इन बेटियों को नहीं माना था आज उनकी हर बेटी ऐसे कई सोने के टुकड़े खरीद कर निर्मला के चरणों में डाल सकती है। □